ओम् शान्ति 22-9-05 मधुबन

सतगुरूवार एडवांस में गई हुई विशेष आत्माओं प्रति भोग तथा वतन का सन्देश (मोहिनी बहन)

आज अमृतवेले बाबा को सब समाचार सुनाकर निमन्त्रण देकर आई थी कि बाबा आज श्राध का भोग है, सबको वतन में बुलाकर यज्ञ का ब्रह्माभोजन खिलाना। तो जब आप सबका यादप्यार लेकर बाबा के पास पहुंची, तो बाबा बहुत प्यार से मीठी दृष्टि देते हुए गले लगाया और कहा कि बच्ची आपकी दुनिया का क्या हालचाल है? तो मैंने मुस्कराया और कहा बाबा आप तो जानीजाननहार हो। दुनिया भी आपकी है तो आपको तो मेरे से जास्ती पता होगा। तो बाबा बोले कि जानी जाननहार होते हुए भी मैं क्यों पूछता हूँ, आप सब बच्चे क्या समझते हो, यह कौन सा समय, कैसा समय चल रहा है? मैंने कहा बाबा ड्रामाप्लैन अनुसार तो अन्तिम समय चल रहा है। तो बाबा ने कहा अन्त के समय बच्चे क्या पुरुषार्थ कर रहे हैं? मैंने कहा बाबा सभी सम्पन्न, सम्पूर्ण बनने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। तो बाबा ने पूछा आप कहाँ तक सम्पन्न सम्पूर्ण बनी हो? तो मैंने कहा बाबा मैं ड्रामानुसार तो समान बनी हूँ, सब बातें ड्रामानुसार ही चल रही हैं। इसलिए मैं ड्रामानुसार ही कहूंगी, फाइनल तो आप ही बताने वाले हो। तो बाबा ने कहा कि देखो दुनिया का वातावरण दिनप्रतिदिन गर्म होता जा रहा है और जो किसी के मन, चित में नहीं होता वह अचानक हो रहा है। चाहे देश हो या विदेश हो, परिवर्तन तो सबका होना है। इसलिए चारों तरफ अभी प्रकृति ने अपना काम करना शुरू कर दिया है। अब पूछने का समय समाप्त हो गया है। अब करने का, होने का समय है। इसलिए हो भी रहा है, कर भी रहे हैं।

तो बाबा ने कहा कि बाबा बच्चों को बार बार इशारा देता है और बच्चे खुद भी अनुभवी बनते जा रहे हैं, देखते, समझते जा रहे हैं, तो देखने वाला, सुनने समझने वाला जो समझदार होता है वह अपने आप अपने को परिवर्तन कर सकता है। अब बाबा नहीं कहेगा, बाबा ने तो इशारा दे दिया अब बच्चों को स्वयं अपना निर्णय लेना है कि मुझे क्या करना है। तो सबको बहुत योगयुक्त, युक्तियुक्त रहना है, अपने आपको न्यारा और उपराम बनाना है क्योंकि समय अभी समाप्ति की ओर चल रहा है। तो मैंने कहा एडवांस पार्टी? तो बाबा ने कहा वह तो रेडी है, वह तो पूछती रहती है कि बाबा हम कब प्रत्यक्ष हों, कब स्टेज पर आवें। आप हमको स्टेज पर लाओ। तो अब बाबा ज्यादा इन्तजार नहीं करेगा। जिसको जितना पुरुषार्थ करना था, वह कर लिया। बाकी जो रहा है वह समय करा देगा। आने वाला समय ही कार्य करायेगा क्योंकि देखने में आता है कि समय और वातावरण के अनुसार बच्चे अपनी स्थिति को बनाते हैं। बच्चों ने अपना गुरू जैसे समय को मान लिया है, समय में हलचल होती है तो बच्चों के पुरुषार्थ में भी हलचल होती है और बाहर की हलचल पूरी होती है तो पुरुषार्थ भी पूरा हो जाता है। इसलिए सब देख रहे हैं कि यह क्या कर रहे हैं। यह कहाँ तक पहुंचे हैं। वह आपको देख रहे हैं और आप समय को देख रहे हो। तो बलिहारी समय की हो जायेगी, कमाई समय की हो जायेगी, आपकी नहीं होगी। जैसे बाबा बहुत सीरियस होकर यह शिक्षायें दे रहा था।

फिर मैंने कहा बाबा आज तो सभी आत्माओं के लिए श्राध का भोग लेकर आई हूँ। दादी ने सबको बहुत-बहुत यादप्यार दिया है, सबके लिए ब्रह्माभोजन बनाकर भेजा है। तो बाबा ने कहा हाँ बच्ची दादी को

तो हर एक की याद रहती है। तो बाबा भी दादी बच्ची की सब दिल पूरी करता है। तो बाबा मुझे एक बहुत सुन्दर हाल में लेकर चला। वहाँ पर मम्मा और कुछ बहिनें स्टेज पर थी बाकी सब ऐसे बैठे थे जो लगता था अपने आप सब नम्बरवार बैठे हों। तो जैसे ही बाबा और मैं पहुंची, तो सभी खड़े हो गये और बाबा से जैसे प्यार भरी दृष्टि ले रहे थे। बाबा के मस्तक से जो किरणें निकल रही थी वह सब तक पहुंच रही थी और सबके मस्तक पर एक स्टार चमक रहा था। बाबा सबको दृष्टि देते हुए आकर गद्दी पर बैठे। मैंने कहा मम्मा आज दादी, गुल्जार दादी, जानकी दादी, रतनमोहिनी दादी सबने आप सबके लिए बहुत-बहुत यादप्यार भेजा है। बोला हाँ, हम भी अपनी सखियों को याद करते हैं। हमने कहा आपके पास तो बहुत बहिनें हो गई हैं, हमारे पास तो पुरानी बहिनें बहुत थोड़ी हैं। सारा झुण्ड यहाँ ही आ गया है। तो बोला एडवांस पार्टी को एडवांस का काम करना है, यह बहुत बड़ा काम है इसलिए बड़ी-बड़ी-बड़ी बहिनें चाहिए। सबको बाबा ने बुलाया है। फिर बाबा ने कहा मम्मा बच्ची तुम्हारी सेना तैयार है? तो मम्मा ने सभी की तरफ देखा तो सभी आंखों से कह रहे थे जी मम्मा। फिर बाबा ने मेरी तरफ देखा और कहा कि यह एडवांस पार्टी तो एकदम तैयार है, आपकी? तो मैंने कहा बाबा यथाशक्ति, समय अनुसार सभी तैयार हैं। अब आप जैसे समझें। आप तो जानी जाननहार हो। बाबा ने कहा प्रकृति भी तैयार है, एडवांस पार्टी भी तैयार है और आप कहती हो हम भी तैयार हैं फिर देरी किसकी है? तो मैं मम्मा की ओर देखने लगी, मम्मा बाबा की ओर देखने लगी। तो बाबा ने कहा अच्छा शुरू करूं। फिर बाबा ने कहा मैं ऐसे शुरू नहीं करूंगा, मैंने कहा है ना जो कुछ होगा अचानक होगा। बाबा तो सिर्फ साक्षी होकर देखने वाला है, करने वाले तो दूसरे हैं। प्रकृति अपने आप करेगी। अभी सब समझने लगे हैं कि कुछ होने वाला है,...लेकिन आप सबके सिवाए किसी को पता नहीं है कि क्या होने वाला है क्योंकि परिवर्तन का कार्य आप बच्चे ही कर रहे हो। आप ही मास्टर त्रिकालदर्शी हो इसलिए यह आपको पता है। तो बाबा ने कहा कि बच्ची आने वाला समय जो होगा वह बहुत भयानक होगा। उस समय क्या हुआ, कैसे हुआ... यह हलचल नहीं चाहिए। बिल्कुल अचल, अडोल, एकरस अवस्था चाहिए क्योंकि उस समय दातापन की स्थिति चाहिए। दाता घबराता नहीं है लेकिन सबको दान देता है। जो भी भटकती हुई आत्मायें, घबराई हुई आत्मायें आयेंगी उनको धीरज देना यह आपका काम है। अगर आप घबराई हुई होगी तो धीरज दे नहीं सकेंगी। इसलिए आप अपनी स्थिति को ऐसा अचल अडोल बनाओ। अन्तिम समय दो शक्तियां ही विशेष काम करेगी - एक सामना करने की शक्ति, दूसरा समाने की शक्ति। यह दो शक्तियां विशेष आप सब बच्चों को अभी से धारण करनी है।

फिर बाबा ने कहा अच्छा आज तो आप सबके लिए ब्रह्मा भोजन लेकर आई हो, तो सामने बहुत सुन्दर कवर से ब्रह्माभोजन ढका हुआ था तो बाबा ने कहा खोलो, तो सभी हमारे साथ उठे और खोला, कहा देखो दादी ने कितना भेजा है। मैंने कहा दादी का दिल बहुत बड़ा है, तो सभी कहने लगे बाबा दादी को बुलाओ ना। तो बाबा ने दादी को, जानकी दादी को, गुल्जार दादी त्रिमूर्ति दादियों को इमर्ज किया तो जो भी सखियां थी, दीदी थी, मम्मा थी, चन्द्रमणी दादी, पुष्पशान्ता दादी जो भी थी वह सब दादी को घेरकर खड़ी हो गई। दादी मुस्कराती हुई सभी बहिनों से मिल रही थी। दादी कहती है आप सब हमको छोड़कर

यहाँ इक्ट्ठी हो गई हो। मैं तो नीचे अकेली हो गई हूँ। तो सब हंसने लगे और कहा आप अकेली कहाँ हो, आप तो त्रिमूर्ति हो और आपके साथ तो बाबा है। तो दादी बोली बाबा तो मेरे साथ है पर मेरी सखियां नहीं हैं। तो सब बोले दादी आप भी वहाँ स्थापना का काम कर रही हो, हम भी यहाँ स्थापना का काम कर रहे हैं। तो दादी ने बाबा को देखा, और कहा बाबा यह सब कहाँ-कहाँ हैं, एक बार तो दिखाओ ना। तो बाबा कहता है मैं मुरबी बच्चे की बात टाल नहीं सकता हूँ। तो बाबा ने जो दादियां बैठी थी, उन सबको एक सेकण्ड में लाइट में बदल दिया, सबके चेहरे अपने वर्तमान रूप में बदल गये। लेकिन थोड़े ही समय में फिर वही संगम का रूप सामने आ गया। ऐसा अभास हुआ कि सब बड़े-बड़े युवक युवती सामने हैं, सबके चेहरे चमक रहे थे पर कौन क्या था, कैसे था, वह तो समझ में नहीं आया। दादी ने कहा बाबा कुछ समझ में तो आया नहीं। तो बाबा ने कहा बच्ची यह बातें समझने की नहीं हैं। यह बाद में समझना। फिर सब दादी से पूछने लगे दादी कैसे चल रहा है? तो बाबा ने कहा मधुबन निवासी तो बेफिकर बादशाह होकर जैसे बाबा की छत्रछाया में बैठे हैं, क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है, इन सब बातों से न्यारे प्यारे बेफिकर बादशाह और दुनिया तो भय में जी रही है, भय में खा रही है, भय में चल रही है, हर एक के अन्दर है कल क्या होगा... कुछ भी होता है, तो उनको अन्दर भय बैठ जाता है। तो उन्हें फिकर से फारिग, भय से निर्भय आपको बनाना है, फिर जो बने जितना बनें, वह उनके ऊपर है। फिर त्रिमूर्ति दादियों ने सबको अपने हाथों से ब्रह्मा भोजन खिलाया। सब इतने खुश जो सब एक दो को खिलाने लगे। फिर जो वहाँ पर आये थे, सबके हाथों में प्लेट दी, तो ऐसे लग रहा था जैसे बाबा ही सबको खिला रहा हो, और सब ऐसे महसूस कर रहे थे, वाह बाबा, वाह दादी... ऐसे गीत गा रहे थे। वह सीन ऐसे लग रहा था जैसे कोई दरबार लगा हुआ हो। सब बड़े प्यार से ब्रह्माभोजन खा रहे थे। फिर बाबा ने कहा आज नामी, अनामी, जान पहचानके, जो कोई ने अपने पूर्वजों के लिए, सम्बन्धियों के लिए बाबा को यादप्यार भेजा और इच्छा रखी कि बाबा उन्हें ब्रह्माभोजन खिलाये, तो बाबा आज उन सबकी इच्छा पूरी कर रहा है। सबको ब्रह्माभोजन खिला रहा है। सब जैसे आश्चर्यचकित होकर देख भी रहे थे, खा भी रहे थे। उनको तो जैसे पता ही नहीं था कि हम किस स्थान पर पहुंच गये हैं। सिर्फ शान्ति और प्यार का वातावरण था। तो बाबा ने सबको यादप्यार दिया और जो सीन इमर्ज किया, वह मर्ज कर दिया। फिर हमने बाबा को भोग खिलाया और बाबा ने सबको यादप्यार देते हमें नीचे भेज दिया। ओम् शान्ति।